PARIPEX - INDIAN JOURNAL OF RESEARCH | Volume - 14 | Issue - 06 | June - 2025 | PRINT ISSN No. 2250 - 1991 | DOI : 10.36106/paripex

ORIGINAL RESEARCH PAPER

Political Science

प्लेटो का शिक्षा सिद्धांतः एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

KEY WORDS:

डॉ. श्रीमति रेणुका शर्मा

अतिथि व्याख्याता डॉ. इन्द्रजीत सरकारी कॉलेज अकलतरा जांजगीर चांपा (छत्तीसगढ़)।

परिचय

प्राचीन यूनानी दार्शनिक प्लेटो (428–348 ईसा पूर्व) को पश्चिमी राजनीतिक चिंतन का जनक माना जाता है। उनके दर्शन का केंद्रीय स्तंभ एक ''आदर्श राज्य'' (प्कमंस ैजंजम) की स्थापना है, जिसका विस्तृत वर्णन उन्होंने अपनी कालजयी कृति ''द रिपब्लिक'' (जीम त्मचनइसपब) में किया है। प्लेटो के लिए, आदर्श राज्य केवल एक सपना नहीं, बल्कि एक साध्य था जिसे उचित शिक्षा प्रणाली के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता था। उनका मानना था कि षशिक्षा मानसिक रोगों को दूर करने का मानसिक उपचार हैष ̈(इपदम, 1973)। यह लेख प्लेटो के शिक्षा सिद्धांत की संरचना, उद्देश्यों, विशेषताओं और आलोचनाओं का संदर्भों के साथ विश्लेषण करेगा।

शिक्षा का उद्देश्य

प्लेटो का शिक्षा सिद्धांत किसी व्यक्ति को मात्र जानकारी या कौशल प्रदान करने तक सीमित नहीं था। इसके उद्देश्य गहरे और बहुआयामी थे, जो सीधे उनके आदर्श राज्य की अवधारणा से जुड़े थे।

आत्मा का विकास और न्याय की स्थापनाः प्लेटो के अनुसार, मानव आत्मा में तीन तत्व होते हैंरू विवेक (त्मेंवद), साहस ैच्पतपज, और क्षुधा (**Appetite**)। एक न्यायपूर्ण व्यक्ति वह है जिसमें विवेक, साहस और क्षुधा पर नियंत्रण रखता है। इसी तरह, एक न्यायपूर्ण राज्य वह है जिसमें शासक वर्ग (विवेक), सैनिक वर्ग (साहस), और उत्पादक वर्ग (क्षुधा) अपने–अपने कर्तव्यों का निर्वहन करते हैं। शिक्षा का मुख्य उद्देश्य आत्मा के इन तीनों तत्वों में सामंजस्य स्थापित करना और प्रत्येक व्यक्ति को उसके स्वाभाविक गुण के अनुसार समाज में स्थान दिलाना है (जीम त्मचनइसपब, ठववा प्ट)।

सत्य का ज्ञान (गुफा का रूपक)ः प्लेटो के अनुसार, यह भौतिक दुनिया षप्रत्ययों के जगत ̆;वतसक व िथ्वतउेद्ध की एक अपूर्ण छाया है। शिक्षा वह प्रक्रिया है जो व्यक्ति को अज्ञान की गुफा से निकालकर ज्ञान के सूर्य के प्रकाश, यानी श्परम सत्यश या श्शुभ के प्रत्ययश (**Form of the Good**) की ओर ले जाती है (जीम त्मचनइसपब, ठववा टप्)। शिक्षा का कार्य आत्मा में ज्ञान डालना नहीं, बल्कि आत्मा की दृष्टि को सही दिशा में मोड़ना है।

दार्शनिक शासक का निर्माणः प्लेटो की शिक्षा प्रणाली का सर्वोच्च लक्ष्य ऐसे श्दार्शनिक राजाश (**Philosopher&King**) तैयार करना था जो निस्वार्थ, ज्ञानी और न्यायप्रिय हों। केवल वही व्यक्ति शासन करने के योग्य है जो सत्य को जानता है और जिसे सत्ता का कोई मोह नहीं है।

शिक्षा की विस्तृत योजना

प्लेटो ने राज्य द्वारा नियंत्रित एक अत्यंत कठोर और लंबी शिक्षा योजना का प्रस्ताव रखा, जो दो मुख्य चरणों में विभाजित थी.

1. प्रारंभिक शिक्षा (जन्म से 20 वर्ष तक)

यह शिक्षा सभी नागरिकों (पुरुषों और महिलाओं दोनों) के लिए अनिवार्य थी। इसका उद्देश्य चरित्र का निर्माण करना था।

व्यायाम (ळलउदेंजपबे) इसका लक्ष्य शरीर को स्वस्थ और अनुशासित बनाना था, न कि केवल पहलवान बनाना। यह शारीरिक सहनशीलता और सैन्य कौशल के लिए आवश्यक था।

संगीत (डनेपब) प्लेटो के लिए श्संगीतश एक व्यापक शब्द था जिसमें साहित्य, कविता, कला, गायन–वादन और गणित शामिल थे। इसका उद्देश्य आत्मा को सद्गुणी, सामंजस्यपूर्ण और सुसंस्कृत बनाना था। प्लेटो कला और साहित्य पर कठोर राज्य–नियंत्रण (ब्मदेवतेीपच) के पक्षधर थे। उनका मानना था कि युवाओं को केवल वही कहानियाँ और संगीत सुनाया जाना चाहिए जो उनमें साहस, संयम और नैतिकता का संचार करें (जीम त्मचनइसपब, ठववा प्प – प्प्प)।

20 वर्ष की आयु में एक परीक्षा आयोजित की जाती थी। जो इसमें असफल होते थे, वे समाज के उत्पादक वर्ग (किसान, कारीगर) का हिस्सा बनते थे।

2. उच्च शिक्षा (20 से 35 वर्ष तक)

यह चरण केवल उन लोगों के लिए था जो प्रारंभिक परीक्षा में उत्तीर्ण होते थे और जिनमें शासक या सैनिक बनने की क्षमता होती थी।

वैज्ञानिक और तार्किक प्रशिक्षण (20 से 30 वर्ष)रू इस दशक में छात्रों को अंकगणित, ज्यामिति, खगोलशास्त्र और तर्कशास्त्र जैसे विषयों की गहन शिक्षा दी जाती थी। इन विषयों का उद्देश्य उनकी तार्किक और अमूर्त चिंतन क्षमता को विकसित करना था।

द्वंद्ववाद (क्पंसमबजपबे) का अध्ययन (30 से 35 वर्ष)रू 30 वर्ष की आयु में एक और कठिन परीक्षा होती थी। इसमें सफल होने वाले सर्वश्रेष्ठ लोगों को दर्शनशास्त्र और द्वंद्ववाद की शिक्षा दी जाती थी। द्वंद्ववाद सत्य तक पहुँचने की सर्वोच्च दार्शनिक पद्धति थी, जिसके माध्यम से छात्र श्प्रत्ययों के जगतश को समझ सकते थे।

3. व्यावहारिक प्रशिक्षण (35 से 50 वर्ष तक)

सैद्धांतिक ज्ञान प्राप्त करने के बाद, इन भावी शासकों को 15 वर्षों के लिए ''गुफा में वापस'' भेजा जाता था। उन्हें समाज में विभिन्न प्रशासनिक पदों पर रहकर दुनिया का व्यावहारिक अनुभव प्राप्त करना होता था। यह उनके सिद्धांत को व्यवहार में परखने की कसौटी थी।

50 वर्ष की आयु में जो व्यक्ति इन सभी परीक्षाओं में खरा उतरता था, वही 'दार्शनिक शासक' बनने का अधिकारी होता था।

आलोचनात्मक मूल्यांकन

प्लेटो के शिक्षा सिद्धांत की कई विद्वानों ने प्रशंसा और आलोचना दोनों की है।

समर्थन और विशेषताएँ

अर्नेस्ट बार्कर (म्तदमेज ठंतामत) जैसे विद्वान प्लेटो की शिक्षा योजना को षआध्यात्मिक समाधानष कहते हैं जो राज्य की समस्याओं का समाधान करती है (**Barker**, 1959)।

महिलाओं को समान शिक्षा का अवसर देना उस समय के हिसाब से एक क्रांतिकारी विचार था।

शिक्षा को चरित्र निर्माण और नैतिकता से जोड़ना इसका सबसे मजबूत पक्ष है।

आलोचनाएँ

अव्यावहारिक और अभिजात्यवादीरू यह प्रणाली अत्यंत लंबी, महंगी और केवल एक छोटे वर्ग (संरक्षक वर्ग) पर केंद्रित है। यह उत्पादक वर्ग की शिक्षा की पूरी तरह से उपेक्षा करती है, जो समाज का बहुसंख्यक हिस्सा है।

सर्वाधिकारवादी प्रवृत्तिरू प्रसिद्ध दार्शनिक कार्ल पॉपर (ज्ञंतस च्वचचमत) अपनी पुस्तक ''द ओपन सोसाइटी एंड इट्स एनिमीज'' में प्लेटो को एक सर्वाधिकारवादी (जवजंसपजंतपंद) विचारक मानते हैं। उनके अनुसार, साहित्य और कला पर कठोर सेंसरशिप व्यक्ति की रचनात्मक स्वतंत्रता का हनन है और यह एक बंद समाज का निर्माण करता है (**Popper**, 1945)।

व्यक्ति पर राज्य का प्रभुत्वरू प्लेटो की प्रणाली में व्यक्ति का महत्व राज्य के लिए एक साधन के रूप में है। व्यक्ति का विकास राज्य की आवश्यकताओं के अधीन है, जो आधुनिक उदारवादी मूल्यों के विरुद्ध है।

निष्कर्ष

आलोचनाओं के बावजूद, प्लेटो का शिक्षा सिद्धांत पश्चिमी चिंतन में एक मील का पत्थर है। उन्होंने पहली बार शिक्षा को एक सामाजिक और राजनीतिक प्रक्रिया के रूप में स्थापित किया जिसका उद्देश्य एक न्यायपूर्ण और स्थिर राज्य का निर्माण करना है। उन्होंने शिक्षा के नैतिक और चारित्रिक पहलुओं पर जो बल दिया, वह आज भी प्रासंगिक है। भले ही उनकी पूरी योजना को लागू करना असंभव हो, लेकिन उनका यह मूल विचार कि एक बेहतर समाज का निर्माण बेहतर और गुणी नागरिकों से ही हो सकता है, शिक्षा के क्षेत्र में हमारा मार्गदर्शन करता रहता है।

संदर्भ सूची (ठपइसपवहतंचील)

1. Plato. (trans. Benjamin Jowett). The Republic.
2. Sabine, George H. (1973). A History of Political Theory. Holt, Rinehart and Winston.
3. Barker, Ernest. (1959). The Political Thought of Plato and Aristotle. Dover Publications. ;मूल रूप से Greek Political Theory: Plato and His Predecessor` के रूप में प्रकाि ातद्ध
4. Popper, Karl. (1945). The Open Society and Its Enemies, Vol. 1: The Spell of Plato. Routledge.